

न्यैरतो ऽल्पशः RY. PRAT. 17, 23. विषमाः समपर्यायैर्वर्तन्ते LĀṬJ. 6, 5, 21. अविकारेण 9, 7, 8. 10, 10, 15. भिन्नस्मिष्टा तु या प्रीतिर्न सा ह्येकेन वर्तन्ते Spr. 1171. इतरेषु संसंध्येषु संसंध्येशेषु च त्रिषु । एकापायेन वर्तन्ते सक्त्यापि शतानि च ॥ so v. a. nehmen um Eins ab M. 1, 70. — 3) sich irgendwo befinden, weilen; da sein, vorhanden sein, sich finden, es giebt (von Personen und Sachen): एते राष्ट्रं वर्तमाना राज्ञः प्रचक्रन्तस्कराः M. 9, 226. सर्वथा वर्तमानो ऽपि स योगी मयि वर्तते BHAG. 6, 31. क्व नु वर्तते MBH. 3, 2737. गृहस्थोपरि 3, 7251. R. 1, 18, 4. 70, 14. स्वे पाथि 2, 21, 60. 26, 25. 4, 3, 5. ÇĀK. 29, 7 (वर्तिष्यते pass. impers.). 39, 13. 98, 15. 99, 6. KATHĀS. 37, 185. BHĀG. P. 3, 28, 24. 4, 26, 16. DHŪRTAS. 89, 5. VET. in LA. (III) 7, 3, 31, 11. BHATT. 7, 103. 8, 68. सत्यथे HARIV. 14023. कण्ठे पियामसवः प्राणा वर्तन्ते भोजनं विना RĀGA-TAR. 4, 230. मूर्ध्नि obenan stehen Spr. 3213. मयि वर्तस्व bleibe bei mir MBH. 3, 6046. Spr. 3182. act. MBH. 1, 637. 3, 12171. 12412. अघनि वर्तन् 13. 350. 3210. R. 3, 62, 25. Spr. 4347. MĀRK. P. 50, 42. — नाराज्ञके जनपदे प्रकृष्टनटनर्तकाः । उत्सवाद्य समाजाद्य वर्तन्ते राष्ट्रवर्धनाः ॥ Spr. 4413. पशवो ऽपि न वर्तन्ते नित्यं राष्ट्रे ह्यराज्ञके 4403. 4407. नहि त्रयोपमा काचित्तव मैथिलि वर्तते R. 5, 22, 13. एते पञ्चदश — गुणा भूतेषु पञ्चसु । वर्तन्ते MBH. 3, 13927. R. 3, 71, 10. SARVADARÇANAS. 13, 14. 66, 13. 116, 13. Comm. zu NĀJAS. 1, 1, 11. पापमधिकं स्त्रीषु वर्तते VET. in LA. (III) 23, 3. व्याकुलं मे हृदि वर्तते PAÑKĀT. 76, 12. fg. sonst bedeutet हृदि, हृदये वर्त् wie मनसि वर्त् am Herzen —, im Sinne liegen, im Kopfe herumgehen: अतो ऽन्यथा न मे वासो वर्तते हृदये क्वचित् MBH. 3, 2602. वाक्यं नारदेनोक्तं वर्तते हृदि नित्यशः 16715. इदं च मे मनसि वर्तते ÇĀK. 25, 22. 33, 12. VIKR. 30, 5. PAÑKĀR. 1, 7, 7. अत्यानन्दसमायुक्ते नावर्तन्ते तदात्मनि (so ist wohl zu lesen) sie befanden sich nicht bei sich so v. a. sie waren ausser sich vor Freude KATHĀS. 55, 184. sich bei Jmd (loc. gen.) vorfinden, da sein: गुरुशापकृतं त्रपं यदिदं त्वयि वर्तते R. 1, 39, 4. जगतसंज्ञनेन शक्तिस्त्वयि वर्तते Verz. d. Oxf. H. 80, a, 25. तयो यज्ञः श्रुतं शीलमलोभः सत्यसंधता । गुरुदेवतपूजा च एता वर्तन्ति भूमिदे (so lesen wir st. भूमिर्दे beider Ausgg.; NILAK. giebt, um den acc. zu erklären, वर्तन्ति die Bed. von अनुसरन्ति) MBH. 13, 3126. मम चाकृतपुण्याया एकः पुत्रो ऽत्र वर्तते KATHĀS. 18, 269. तवेदानीं नुत्तज्ञा च न वर्तस्यति 316. एवमादिर्महार्गवस्तस्य संप्रति वर्तते HARIV. 15037. तदस्माकमप्यत्र विषये महत्कुतूहलं वर्तते PAÑKĀT. 97, 10. योगज्ञेयौ हि सीताया वर्तन्ते (so die ed. Bomb.) लक्ष्मणावयोः so v. a. steht bei uns, hängt von uns ab R. 2, 53, 3. — 4) sich in einem best. Lebensalter, in einer best. Lage, in einem best. Falle, bei einer best. Beschäftigung befinden; einer Sache obliegen, sich Etwas angelegen sein lassen; mit loc.: वयस्याथे BHĀG. P. 1, 6, 2. पश्चिमे वयसि HIT. 28, 2. यौवने R. 4, 63, 13. व्यसने 3, 73, 18. महति विषादे VIKR. 9, 5. तृतीयायां प्रकृतौ वर्तता त्वया MBH. 2, 1434. जीविते वर्तमानः so v. a. lebend Spr. 982. वशे in Jmdes Gewalt stehen 4417. PAÑKĀR. 3, 11, 10. निदेशे MBH. 1, 637. मातुर्मते DAÇAR. 63, 5. अदेशे भगवतः BHĀG. P. 3, 13, 14. सर्तां क्रमे R. 2, 25, 2. उभे तपसि वर्तन् MBH. 1, 1860. 4308. 5, 6053. मनुष्यधर्मे 15, 841. सारुसे M. 8, 346. कर्मसु 9, 319. BHAG. 3, 22. Spr. 4641. M. 2, 5. लोभेषु HARIV. 294. उपकारे R. 3, 73, 40. MĀRK. P. 14, 86. अकृते Spr. 3538. उदाहृतस्त्वेवे KATHĀS. 14, 26. मुखोपभोगेषु 21, 17. राजक्रियायाम् PAÑKĀT. 63, 25. वैज्रवास्त्रस्य शमने HARIV. 10941. RAGH. 8, 20. मर्यादाव्यतिक्रमे PAÑKĀT. 46, 21. न वर्ते प्रतिपद्ये

so v. a. ich bin nicht in dem Falle es annehmen zu können R. 2, 50, 29 (47, 20 GORR.). in einer best. Bedeutung stehen, eine best. Bedeutung haben: पुष्यसमोपस्थे चन्द्रमसि पुष्यशब्दे वर्तते PAT. zu P. 4, 2, 3. Schol. zu P. 1, 2, 15. सप्तम्यर्थमात्रे वर्तमानमीदृदत्तम् zu 4, 1, 19. — 5) leben von (instr.): क्रीतित्पन्नेन (अन्नेन) ऀCV. GRHJ. 4, 4, 15. मत्स्यमीसेन HARIV. 5237. VARĀH. BRH. S. 13, 17. KATHĀS. 4, 123. ÇĀK. zu BRH. ĀR. UP. S. 274. BHĀG. P. 4, 28, 36. 5, 8, 30 (°वोरूथा व° zu trennen). mit einem absol.: यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः । तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः M. 3, 77. — 6) leben so v. a. sein Leben hinbringen; sich befinden, sich fühlen: मातामरुकुले चापि यथा वर्तामहे वयम् । तथा पूर्वं भवाञ्छंसेत्पितुर्मातुश्च मे ऽग्रतः ॥ R. GORR. 1, 80, 20. कथं मे वर्तते बाला (तानि) पश्यन्ती मामपश्यती 4, 29, 17. त्यक्ता त्वया कथं वर्तस्यामि KATHĀS. 53, 113. Spr. 4481. BHĀG. P. 1, 13, 42. 4, 28, 18. 21. पश्यतश्च ताम् । ममावर्तत तत्कालं न ज्ञाने हृदयं कथम् KATHĀS. 22, 108. शिशुर्मथ्या पितुरङ्गे सुमुखं वर्तते MBH. 3, 1740. — 7) zu Werke gehen, verfahren, sich benehmen: तथा R. 2, 30, 38 (32 GORR.). Spr. 1695. 3244. ततो ऽन्यथा M. 8, 397. HARIV. 9226. SUÇR. 1, 7, 9. एवम् R. 1, 8, 10. एवविधम् KATHĀS. 12, 159. प्रतिकूलम् M. 10, 31. विधिपूर्वकम् SUÇR. 2, 93, 7. कामतम् M. 9, 63. अनुव्रतम् MBH. 15, 678. साधु R. 4, 28, 11. उपम् BHATT. 16, 7. mit einem absol.: अतः तमं न ते वचो ऽतिक्रम्य वर्तितुम् R. GORR. 1, 60, 4. तस्य मतमुत्क्रम्य वर्तितुम् 2, 23, 9. यदि धर्मं पुरस्कृत्य पुत्रं वर्तितुमिच्छसि 22, 1. gegen Jmd, mit loc.: पितृवन्नृपु M. 7, 80. 9, 108. MBH. 3, 1461. 5, 7079. 15, 678. R. 2, 18, 16. 41, 4 (40, 4 GORR.). 32, 33 (49, 34 GORR.). 58, 16. 73, 9. 104, 19 (ववतिरे zu lesen). R. GORR. 2, 38, 24. 4, 28, 11. 5, 36, 64. Spr. 1612. 2607. 4830. PRAB. 106, 1. मातापित्रोर्गुरुषु च सम्यग्वर्तन्ति ये सदा MBH. 13, 2042. 1, 3259. गुरुवच्च ह्युषावच्च वर्तयातां परस्परम् M. 9, 62. निर्वैरसुखितास्तस्माद्वर्तधर्मितरेतरम् KATHĀS. 50, 116. mit dat.: कथं च तस्मै वर्तयम् MBH. 14, 140. mit acc. (!): पुत्रश्च पितरं मोक्षाभिर्मर्यादां वर्तत 7, 1392. वर्त् mit loc. der Person bedeutet auch in einem best. Verhältniss zu Jmd stehen, insbes. in einem unerlaubten geschlechtlichen: भार्यायां वर्तसे धातू र्मायां त्वमधार्मिकः R. 4, 17, 28. mit सह verkehren mit: पापमित्रैः सह वर्तितुम् Spr. 2729. अवर्तितुम् mit abl. der Person gegen Jmdes Willen verfahren R. 2, 111, 6. verfahren —, zu Werke gehen mit (instr.) so v. a. an den Tag legen, äussern, anwenden, gebrauchen: अनया वृत्त्या स्त्रीनप्रतिज्ञया R. 2, 109, 8. याम्यया वृत्त्या M. 8, 173. अमायया 7, 104. कविर्निर्मागतौ हृदेन भरतेषु वर्तमानः MĀLAT. 3, 9. fg. धर्मेण KATHĀS. 43, 160. देशद्वेषेण (वेषद्वेषेण die neuere Ausg., वंशद्वेषेण NILAK.) वर्ततम् HARIV. 8335. मित्रभावेन Spr. 4754. विभुत्वेन ÇVETĀCV. UP. 4, 4. श्रौदासीन्येन RAGH. 10, 26. पितृत्वेन PRAB. 106, 1. अत्मानुमानेन VIKR. 63, 13. अनुकल्पेन M. 11, 30. श्रोत्रसा, सक्तसा, अम्भसा P. 4, 4, 27. द्युतेनैवारिशिरस्सु वर्तते देवः MĀLAT. 61, 18. या तव । अभिषेकविद्यतेन पुत्रराज्याय वर्तते R. 2, 23, 24. वर्ततीनां पराज्ञया so v. a. unter eines Andern Befehlen stehend 6, 98, 28. यावद्वर्तस्यति पाञ्चाली पत्रेणानेन so v. a. gebrauchen MBH. 3, 202. वर्तत ब्रह्मणा विप्रो राजन्यो रत्नया भुवः so v. a. obliegen BHĀG. P. 10, 24, 20. प्रजाद्वेषेण so v. a. in der Gestalt eines Sohnes auftreten 1, 7, 45. — 8) mit dat. sich um Etwas kümmern, sich Etwas angelegen sein lassen: पुत्रराज्याय R. 2, 23, 24. शीलगुणाय 5, 37, 30. — 9) mit dat. gerethen zu: पुत्रेण किं फलं यः पितृदुःखाय वर्तते ÇUR. in LA. (III) 35, 12. — 10) in